CHAPTER 37
MUSIC

Doctoral Theses

01. अग्रवाल (देविका)
पटियाला घराने के उस्ताद मुनव्वर आली खाँ का सांगीतिक योगदान ।
निर्देशक: डॉ. प्रेरणा अरोड़ा
Th 27258

सारांश

घराना शब्द संगीत के क्षेत्र में एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है तथा कई शताब्दियों से यह शब्द अस्तित्व में है। इस शब्द के अगर शाब्दिक अर्थ की बात करे तो `घराना` का अर्थ किसी वंश, परिवार, कुटुंब आदि से सम्बंधित हो सकता है। किन्तु संगीत की दृष्टि में घराना उस विशेष प्रकार की गायिकी, वादन शैली या नृत्य विधा को दर्शाता है, जो अपने आप में विशिष्ट है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी उन्ही विशिष्टताओं को आगे लेकर बढ़ा जा रहा है। उदाहरण के लिए किसी एक राग का गायन, उसका विस्तार, आवाज़ लगाने का तरीका, बोल बनाव, आलापचारी, लयकारियाँ आदि अनेक प्रकार के सांगीतिक तत्व प्रत्येक घराने में भिन्न भिन्न रूप से प्रयोग किये जाते हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पटियाला एवं कसूर घराने का नाम प्रमुख घरानो में सम्मिलित किया गया है। अधिकतर ये देखा गया है कि कसूर पटियाला घराने का नाम एक साथ लिया जाता है तथा `कसूर` नामक स्थान से सम्बंधित कलाकारों को भी इसी श्रेणी में गिना जाता है। परन्तु जब इस सन्दर्भ में शोध किया गया तथा कुछ कलाकारों का साक्षात्कार किया गया तो यह बात सामने आयी कि कई मायनो में कसूर अंग पटियाला घराने की गायिकी से भिन्न है तथा कसूर की प्राचीनता अधिक है जबकि पटियाला घराना नवीन घरानो में ही शामिल किया गया है। उस्ताद मुनव्वर अली खान कसूर पटियाला घराना के एक उत्कृष्ट कलाकार माने जाते हैं। इन्होने मुख्य रूप से संगीत की शिक्षा अपने पिता उस्ताद बड़े गुलाम अली खान से ही प्राप्त की। इन्होने न सिर्फ शास्त्रीय अपितु उपशास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया। इनके द्वारा गायी हुई अनेक ठुमरियां एवं गीत आज भी संगीत श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करती हैं। इन्होने अनेक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय बंदिशों की रचना भी की जो हिंदी एवं पंजाबी भाषा में थी।

विषय सूची

1. हिंदुस्तानी संगीत में पटियाला घराने का सांगीतिक इतिहास एवं क्रमिक विकास 2. उस्ताद मुनव्वर अली खाँ का जीवन परिचय 3. शैलीगत विशेषताएँ एवं स्वरलिपिबद्ध बन्दिशें 4. साक्षात्कार एवं विद्धानों के विचार उपसंहार । परिशिष्टि। संदर्भ ग्रंथ सूची।

02. कुशवाहा (शिव नारायण)
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सितार पर गायकी अंग की प्रस्तुति – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक: डॉ. जगबंधु प्रसाद और डॉ. राजीव वर्मा
Th 26807

सारांश

तंत्र वाद्य का प्राचीन काल से ही भारतीय शास्त्री संगीत में एक महत्वपूर्ण स्थान है एवम इनका प्रयोग गायन के साथ किया जाता था। तंत्र वद्यो में सितार वाद्य एक प्रमुख वाद्य है इस वाद्य के वादे ने अपनी सुविधा व रूचि के अनुसार परीस्कृत किया। यादपि सितार के जन्म से पूर्व तंत्र वायदों में वीणा और गायन में ध्रुपद ही प्रधान था। परन्तु सितार के साथ-साथ ही ख्याल और कव्वाली का भी उदय हो चूका था इसलिये प्रारम्भिक अवस्था में

उसकी वादन शैली का वीणा वादन पद्धति पर आधारित होना स्वभाविक था। ध्रुपद के साथ-साथ ख्याल गायकी का भी सितार वादन पर प्रभाव पड़ा। ध्रुपद पर आधार रचना का प्रचलन मध्य कल तक रहा और 18 वी शताब्दी ऐसा धीरे - धीरे ख्याल गायकी की भी लोकप्रियता का प्रभाव सितार वादन पर पड़ा। ख्याल से प्रभावित मसीत खानी और रजा खानी गतो का प्रादुर्भावो हुआ जो आज भी प्रचार में है। इस प्रकार ये छोटे ख्याल और बड़े ख्याल के समानान्तर है। सितार वादन में गायकी का विशेष स्थान है। सितार में गायकी अंग बजाते समय गायन की क्रियाओं को ही दर्शया है।

विषय सूची

1. सितार की एटिहासिक पृष्ठभूमि 2. सितार वादन में गायकी अंग की विकासगत आधुनिक प्रवृत्ति 3. सितार वादन में शास्त्रीय, उपशस्त्रीय एवं अन्यगायन शैलियों का प्रभाव 4. सितार वादन पर गायकी अंग की प्रमुख विशेषताएँ तथा उससे संबन्धित घराना एवं कलाकारों का योगदान 5. वर्तमान प्रीपेक्ष्यमें सितार पर गायकी अंग की प्रस्तुति संबंधी विषय पर कुछ विद्धवानों का मत . उपसंहारर . संदर्भ सूची।

03. कौशिक (रिंजा रिसा)
असम की लोकगीत परंपरा : कामरूपी और गोवालपारीय लोकगीत के विशेष संदर्भ मे।
निर्देशक: प्रो. अलका नागपाल
Th 26808

सारांश

असम या आसाम भारत उत्तर पूर्वी राज्यों एक है। लोकगीत से लेकर विचित्र सांस्कृतिक सम्पदाओं से असम विशेष रूप से समृद्व है। कामरूपी और गोवालपारीया लोकगीत असम के अति मधुर लोकगीत विधाएँ है। इन्ही दोनो विधाओं पर यह शोध कार्य किया गया है।

विषय सूची

1. असम की संस्कृति और लोकसंगीतिक परंपरा 2. असम की कामरूपी लोकगीत परंपरा 3. असम की गौवालपारीया लोकगीत परंपरा 4. कामरूपी और गौवालपारीया लोकगीत मे प्रयुक्त वाद्यों का विवरण 5. कुछ प्रसिद्ध गायक एवं गायिकाओं का जीवन परिचय (कामरूपी और गौवालपारीया लोकगीत मे) उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. गीतांजली
ग्वालियर घराने के संगीतज्ञ पं. कृष्णराव शंकर पंडित का भारतीय संगीत में योगदान।
निर्देशक: प्रो. अलका नागपाल
Th 26966

सारांश

पंडित जी का कार्य क्षेत्रा बहुआयामी था। वे छात्रों वेफ प्रिय शिक्षक, श्रोताओं को मंत्रामुग्ध करने वाले कलाकार, वाग्गेयकार, शोध्कर्त्ता और विद्वान प्रशासक तो थे ही, उन्होने संगीत कला वेफ उदार वेफ लिए अपने व्यक्तिगत लाभ या सुविध को गौण मानते हुए जिस विनम्र समर्पण–भाव से अपना जीवन–यापन किया, वह संगीत–क्षेत्रा में कार्य करने वालों वेफ लिए प्रेरणादायक हैं।पंडित जी वेफ सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन बहुमुखी किन्तु संगीत वेफ लिए ही समर्पित रहा, उनका जन्म ही संगीत वेफ प्रचार प्रसार एवं जनसाधरण को प्रेरणा देने वेफ लिए हुआ। स्वयं एक परमोच्यकोटि वेफ संगीत साध्क, कलाकार तो वह थे ही, साथ ही संगीत वेफ प्रचारक, संगीत छात्रों वेफ प्रोत्साहक और संगीत विद्या वेफ संरक्षक वेफ रूप में हमारे सामने आते हैं। परंपरा को वे सवोर्चच स्थान देते थे, पारंपरिक बंदिशों को वे वेद वाक्य मानते थे। उनकी जीवन यात्राा हम जैसे संगीत विद्यार्थियों वेफ लिए प्रेरणादायक है। अंत में इस शोध–प्रबन्ध वेफ

अध्यायों में पंडित जी वेफ व्यक्तित्व तथा वृफतित्व वेफ विषय में किए गए विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका जीवन संगीत वेफ लिए समर्पित रहा, उनका जन्म ही संगीत की तपस्या व प्रचार–प्रसार वेफ लिए हुआ था।

विषय सूची

1. संगीत एवं विबिन्न घरानों का उदगम 2. ग्वालियर घराने की पृष्ठीभूमी 3. पंडित घराना एवं पं. कृष्णराव शंकर जी का जीवनवृत 4. कृष्णराव जी का भारतीय संगीत मे योगदान 5. पंडित कृष्णराव जी की शिक्षण पद्धति, शिष्य परंपरा एवं सम्मान. उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची परिशिष्टि।

05. JATIN MOHAN
Course of Musical Sounds: A Study and Investigation.
Supervisor: Dr. Rajpal Singh
Th 26806

Abstract

This thesis aims to study and investigate the characteristics of musical sounds in the realm of intonation. It ponders upon the differentiation between musical and non-musical sounds through the realm of intonation by studying intonational intricacies in Western and Hindustani classical music. It first reflects on intonation through mathematical, historical, and to some extent, ethnomusicological analysis of scales and the concept of scales in Western and Hindustani classical music. Subsequently, it proceeds to investigate the intonation in the periphery of smaller pitch classes known as microtonality, both in Western and Hindustani classical music. The thesis is divided into four parts, which are as thus – 1. Sound and its Fundamentals This chapter covers three fundamental elements involved in the production of sound: Producer, Medium, and Receiver. It explains most of the essential concepts among these three aspects of sound, such as simple harmonic motion, velocity, acoustic resonance, etc. 2. Intonation This chapter provides the description and analysis of the major intonation systems in western classic music and the intonation system of Shruti-s in Hindustani classical music. In western music, the focus points are on three major tunings; Pythagorean scale, just intonation scale, and the equal temperament. Regarding Hindustani classical music, the thesis provides a detailed historical literature review of the concept of Shruti-s and Gramas, beginning from Bharata Muni to Dr. Vidyadhar Oke. 3. Microtonality in the Western Music The author begun this chapter with multiple definitions for microtonality and addressed the inherent vagueness of the term itself. In the realm of western music, the author analysed the two standard techniques used for the construction of microtonal scales. First, the extended just intonation and extended equal temperament. I studied and analysed a few composers with their scales and mathematical intricacies and how the audience of their period perceived them. 4. Microtonality in Hindustani Classical Music In this chapter, I addressed the conceptual differences by operating with a different definition of intonation and microtonality for both forms of music; especially regarding microtonality, I that treated microtonality in Hindustani music as a ubiquitous "nuance." Subsequently, the thesis investigates this nuance and its importance in the form of different musical ornamentation, with an ethnomusicological approach. Conclusion In conclusion, the author summarized my research and attempted to indicate the possibilities of new research questions for the following researchers.

Contents

1. Introduction 2. Sound and its fundamenls 3. Musical sounds and intonation systems 4. Microtonality in western music 5. Microtonality in Hindustani music 6. Conclusion. Appendices. Bibliography.

06. जयसवाल (आशीष)
संगीतकार चित्रगुप्त एवं उनकी परंपरा की सृजनात्मकता का योगदान।
निर्देशक: : डॉ. सुदिप्ता शर्मा और डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन
Th 27125

सारांश

इस शोध कार्य को मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में हिन्दी पिफल्म संगीत की विकास यात्राा का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। अलग–अलग दशकों में पिफल्म संगीत में वैफसे परिवर्तन आया इसकी चर्चा की गई है। संगीतकार चित्रागुप्त वेफ व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त करने हेतु सौभाग्य से मुझे उनकी सुपुत्राी डॉ. सुध श्रीवास्तव से मुलाव़फात करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सुध जी ने सहज भाव से मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दिया और उन्होंने मेरे लिए महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कर दी। इस सामग्री वेफ सहारे तथा उनसे जुड़े लोगों से बातचीत वेफ आधर पर मैंने चित्रागुप्त जी वेफ व्यक्तित्व को जानने की वुफछ कोशिश की है। यह सब सामग्री द्वितीय अध्याय में वर्णित है। तृतीय अध्याय में चित्रागुप्त की सृजनशीलता का उनवेफ 43 वर्षों वेफ पिफल्म संगीत में योगदान को छः कालखण्डों में विभाजित करवेफ विवरणात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। हर कलाकार का धीरे–धीरे विकास होता है, चित्रागुप्त भी इसवेफ अपवाद नहीं हैं। उनवेफ सृजनात्मकता का विवरण इस अध्याय में दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में चित्रागुप्त वेफ संगीत से सजी भोजपुरी एवं वुफछ अन्य क्षेत्राीय भाषी पिफल्मों वेफ संगीत की चर्चा की गई है। हिंदी पिफल्म संगीत वेफ साथ–साथ भोजपुरी पिफल्म संगीत वेफ स्वर्णकाल वेफ चित्रागुप्त एकमात्रा ध्वाजारोहक रहे हैं। भोजपुरी संगीत वेफ पितामह चित्रागुप्त वेफ भोजपुरी पिफल्मों में योगदान का ज़िक्र इस अध्याय में किया गया है। संगीतकार चित्रागुप्त वेफ मिठास भरे संगीत की परम्परा और विरासत को बख़ूबी संभालने वाले उनको दोनों पुत्राों संगीतकार जोड़ी आनंद–मिलिंद वेफ हिन्दी पिफल्म संगीत में योगदान का विवरण पंचम अध्याय में दिया गया है। आज आनंद–मिलिंद हिंदी पिफल्म संगीत वेफ सपफल संगीतकारों की श्रेणी में गिने जाते है। यह चित्रागुप्त की ही प्रेरणा थी कि उनवेफ दोनों पुत्राों ने पिफल्म जगत में ख़ूब नाम कमाया और अपने पिता वेफ द्वारा अर्जित ख्याति में अत्यध्कि बढ़ोत्तरी कीऋ इन सभी बातों का ज़िक्र इस अध्याय में किया गया है। षष्ठम अध्याय वेफ अंतर्गत उन गुणीजनों वेफ विचारों को साझा किया गया है जिनसे चित्रागुप्त सीध सरोकार रखते थे। उनवेफ लिए मेंडोलिन एवं बैंजो बजाने वाले प्रसि(कलाकार श्री किशोर देसाई, उनकी पुत्राी डॉ. सुध श्रीवास्तव से बातचीत का ब्योरा इस अध्याय में दिया गया है। साथ ही उनवेफ दोनों पुत्राों श्री आनंद एवं श्री मिलिंद की विविध् भारती पर उद्घोषक कमल शर्मा से हुई बातचीत वेफ मुख्य अंशों को शब्द–चित्रा दिया गया है। प्रसि(संगीत चिंतक एवं लेखिका डॉ. लावण्या कीर्ति सिंह 'काव्या' एवं शोध्कर्ता वेफ पिता का एक हिंदी पअ एवं भोजपुरी पिफल्म संगीत प्रेमी वेफ रूप में चित्रागुप्त वेफ संबंध में दिये गये विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. हिन्दी फिल्म संगीत की विकास यात्रा 2. संगीतकार चित्रगुप्त का संक्षिप्त जीवन वृत एवं व्यक्तित्व 3. संगीतकार चित्रगुप्त की सृजनशीलता का योगदान 4. भोजपुरी एवं कुछ अन्य क्षेत्रीयभाषी फिल्मों मे चित्रगुप्त का संगीत निर्देशन 5. चित्रगुप्त की सांगीतिक परंपरा के वाहक आनंद – मिलिंद का सांगीतिक योगदान 6. संगीतकार चित्रगुप्त के संबंध मे उनके परिचितों एवं संगीत छितकों के विचार 7. उपसंहार. : हिन्दी भोजपुरी एवं अन्य क्षेत्रीय फिल्म संगीत मे चित्रगुप्त का योगदान . परिशिष्टि।

07. झा (शिल्पी)
महाकवि विद्यापति रचित मैथिली लोकगीतों का सांगीतिक वैशिष्टय।
निर्देशक: डॉ॰ जगबंधु प्रसाद
Th 26809

सारांश

विद्यापति रचित विविध गीतों का मिथिला की सांस्तिक धरोहर के रूप में बहुत महत्त्व है। विद्यापति से ही मिथिला की लोक भाषा 'मैथिली' की शुरुआत मानी जाती है। 13वीं सदी में विद्यापति जी का जन्म हुआ और अपने युवावस्था तक आते आते इन्होंने कई संस्त ग्रंथों की रचना की, परन्तु उन्हें असली संतुष्टि 'देसिल बयना' अर्थात 'लोकभाषा' में लिखकर ही मिली। उनकी पदों की भाषा आज के मैथिली से भिन्न अवश्य थी, परन्तु अत्यंत सहज, ग्राह्य एवं जन–जन में आसानी से अपनायें जाने योग्य थी। विद्यापति ने 'पदावली' लिखा, भक्ति पदों श्रृंगार पदों और साथ ही ऋतु, हास्य एवं करूण आदि अनेक प्रकार के पदों की रचना की। उनकी रचित अधिकतर पदों को आज लोककंठ से सुना जा सकता है। यही लोककंठ में प्रचलित, प्रचारित व सुरक्षित गीत 'लोकगीतों' की श्रेणी में रखे गये। विद्यापति लोकगीतों में विभिन्न राग प्रयोग, लयात्मक, वैविध्यता, गीतों में शांत रस, माधुर्य की उपस्थिति इसे अन्य लोकगीतों से पूर्णतः अलग करती है। सांगीतिक दृष्टि से विद्यापति लोकगीत उत्ष्ठ श्रेणी के गीत माने जाते हैं। गीत के बोलों में ही विद्यापति ने कई सांगीतिक शब्दावली, रागनाम, वाद्यनाम आदि का प्रयोग किया। साथ विद्यापति गीतों में राग एवं ताल को जो समन्वय दिखता है, वह अद्भुत होता है। इसलिये अधिक से अधिक इन गीतों का गाया जाये, अधिक से अधिक कार्यक्रमों के द्वारा गीतों का प्रचार हो और कलाकारों को उचित सहयोग भी प्राप्त हो, तो विद्यापति लोकगीतों की पारम्परिक धुनों और उनके संगीत को सुरक्षित किया जा सकता है।

विषय सूची

1. विद्यापति : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. लोकगीत की एतिहासिक पृष्ठभूमि 3. विद्यापति रचित विभिन्न मैथिली लोकगीत तथा उनकी काव्यात्मक विशेषता 4. विद्यापति मैथिलीलोकगीतों का सांगीतिक विश्लेषण 5. महाकवि विद्यापति के संबंध मे कुछ विद्वानों, कलाकारों द्वारा साक्षात्कार. उपसंहार.संदर्भ ग्रंथ सूची।

08. दत्ता (दिव्या)
हिंदुस्तानी शस्तरीय संगीत का आधार – वाद्य तानपूरा एक अध्ययन ।
निर्देशक: प्रो. अनन्य कुमार डे
Th 26810

सारांश

भारतीय संस्कृति में संगीत कला को उच्च कोटि का स्थान प्राप्त है। सम्पूर्ण मानव जाति के हृदय के सूक्ष्मतम भावों की अभिव्यक्ति एवं भावनात्मक विकास का एक सर्वश्रेष्ठ माध्यम संगीत है। इसी नैसर्गिक गुण के कारण इसे दिव्य कला माना गया है और संगीतकार को दैवज्ञ । विद्वानों के द्वारा संगीत की परिभाषा में गायनए वादन तथा नृत्य का सम्मिश्रण माना गया है। ये तीनों धाराएं पृथक-पृथक होते हुए भी एक दूसरे की पूरक हैं तथा इन तीनों का ही विकास समानान्तर रूप से होता रहा है। संगीत की दोनों ही धाराओं चाहे हिन्दुस्तानी संगीत हो या कर्नाटक संगीतए दोनों ही पद्धतियों में आधार स्वर की नितान्त आवश्यकता होती है। इसके बिना गायन एवं वादन दोनों ही असम्भव है। प्राचीन काल में दो व्यक्ति मिलकरए इसी आधार स्वर की कमी को अपने गले से (गात्र वीणा) पूरा किया करते थे। कुछ समय पश्चात् यह कार्य वीणा के माध्यम से किया जाने लगा। आगे चलकर तानपुरा ने पूर्णतः इसका स्थान ले लिया । वर्तमान में भी आधार स्वर का प्रमुख माध्यम तानपुरा ही है। तानपुरा को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बहुत ही प्रचलित वाद्यों की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है। इसका संबंध तुम्बरू ऋषि से जोड़ा जाता है। तानपुरे का सर्वप्रथम विधिवत नामोल्लेख पंडित अहोबलकृत संगीत पारिजातृ नामक संगीत ग्रंथ में मिलता है। ऐसा माना जाता है कि प्रारम्भ में तानपुरे में केवल एक ही तार हुआ करता था जो

आधर स्वर को उत्पन्न करता था। आगे चलकर इसमें तीन अन्य तार जोड़े गयेए जिससे ध्वनि का अत्यधिकविस्तार हुआ। आवश्यकतानुसार पाँच या छः तारों के तानपुरे भी देखने को मिल जाते हैं। तानपुरे से षड्ज पंचम अथवा षड्ज - मध्यम की गूंज गायन को गूंजदार बनाने में बहुत सहायक होती है। तानपुरे के विशेषता यह है कि परोक्ष रूप में तानपुरे से केवल इने-गिने स्वर निकलते हैंए किन्तु अपरोक्ष रूप से सातों स्वरों की उत्पत्ति सहायक नाद के रूप में होती है। ये नाद सभी तानपुरों से तथा सभी व्यक्तियों के लिए ग्राह्य नहीं है। जब एक अच्छे तानपुरे को ठीक से मिलाकर एक अनुभवी व्यक्ति सुनता है तो उसे सहायक नाद सुनाई पड़ते हैं। तानपुरे का स्वर बहुत ही मनोहरी तथा नामय वातावरण की सृष्टि में सहायक होता है। तानपुरे से उत्पन्न ध्वनि से जब कलाकार का गायन अथवा वादन पूरी तरह लीन हो जाता हैए तब उसका कार्यक्रम कर्णप्रिय एवं अत्यन्त मधुर होता है। इसी कारण विद्वानों ने तानपुरे को ृनिराकार ब्रह्म की उपमा दी है।

विषय सूची

1. वाद्यों की उत्पत्ति एवं विकास 2. तत वाद्यों की उत्तपत्ति एवं विकास 3. तानपुरे का उद्गम एवं विकास 4. तानपुरे की बनावट एवं निर्माण – विधि 5. भारत मे तानपुरे के प्रमुख निरर्माण कर्ता 6. वर्तमान मे तानपुरे के विभिनन स्वरूप 7. आधार वाद्य के रूप मे तानपुरे की भूमिका . उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची

09. निशा

सांस्कृतिक सौहार्द मे संगीत का महत्व एवं भूमिका।

निर्देशक: डॉ. सुदीप्त शर्मा प्रो. शैलेंद्र गोस्वामी

Th 27126

सारांश

'संगीत तोड़ता नहीं जोड़ता है।' इस कथन में विराट अर्थ निहित है, जिसको किसी परिचित व अपरिचित भाषा, वाद्य, कण्ठ इत्यादि से उत्पन्न मनोहर स्वर लहरियों को सुनने के पश्चात्, श्रोताओं की प्रसन्नता व आनन्द सि(करते हैं। संगीत द्वारा पोषित इस आनन्द भाव में धर्मिक, जातिगत व सांस्कृतिक इत्यादि किसी भी प्रकार के भेदभाव का कोई स्थान नहीं होता। सांस्कृतिक सौहार्द इस सकारात्मक भाव की एक मुख्य इकाई है। जिसका सामान्य अर्थ सांस्कृतिक मित्राता, सद्भावना, भाईचारा इत्यादि है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय– फसांस्कृतिक सौहार्द में संगीत का महत्व एवम् भूमिकाय है। यद्यपि यह विषय अत्यंत विस्तृत है जिसके लिए अनेकों वर्षों के अध्ययन की आवश्यकता है। किन्तु समय की निश्चित अवधि में शोध कार्य समाप्त करने हेतु, शोध, विशेष रूप से भारतीय संस्कृति व संगीत पर आधरित है। सांस्कृतिक मित्राता, सौहार्द, सद्भावना आदि शब्दों का भारतीय संस्कृति में बहुत महत्व रहा है क्योंकि अतुल्य भारत के नाम से विश्व भर में प्रसि(इस देश की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। यहाँ प्रत्येक संस्कृति की अपनी पारंपरिक मान्यताएँ व सीमाएं हैं। जिसके कारण आपसी विरोध उत्पन्न होने की सम्भावना भी बनी रहती है। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक सौहार्द अथवा भाईचारे की यह अवधरणा भारतीय संस्कृति के मूल में सदैव ही विश्व बंधुत्व अथवा वसुधैव कुटुंबकम् जैसे आदर्शों के रूप में विद्यमान रही है। जिसको भारतीय संगीत ने सदैव ही सकारात्मक भावों में पोषित किया है। यह समाज कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है, जिसमें किसी भी प्रकार के धर्मिक, सामाजिक व जातिगत भेद–भाव का कोई स्थान नहीं है। स्वर चाहे किसी भी वाद्य या कंठ से उत्पन्न हो, वह सहज ही प्रसन्नचित श्रोताओं को समान रूप से आनन्दित करता है। संगीत व्यक्ति को सभी प्रकार के द्वेषों से भी मुक्त कर सदैव ही प्रेम व प्रीति पूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। संगीत संस्कृतियों क बीच स्थापित विविधताओं के बावजूद भी संस्कृतियों में आपसी भाईचारे व सौहार्द को स्थापित करने में सक्षम है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध इसी सांस्कृतिक सौहार्द व भाईचारे में संगीत की भूमिका व महत्व पर आधरित है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. भारतीय संस्कृति व उसके विभिन्न घटक 3. संगीत द्वारा सांस्कृतिक सद् भावना की एटिहाशिक पृष्टीभूमि 4.कुछ प्रमुख संस्थाओं द्वारा सांस्कृतिक सौहार्द हेतु किए गए प्रयास 5. कुछ प्रमुख संगीतकारों द्वारा सांस्कृतिक सौहार्द के लिए संगीत को साध्य बनाकर किए गए व्यक्तिगत प्रयास . उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची परिशिष्ठ।

10. भाटिया (ओशीन) नी दिव्या भाटिया

पंजाब प्रांत की काफ़ी गायन शैली एक विशेषलणात्मक अध्ययन ।

निर्देशक: प्रो. राजीव वर्मा

Th 27127

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में काप़फी वेफ साहित्यिक व सांगीतिक पक्ष वेफ विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। काप़फी भक्ति प्रधन रचना है जिसे सूप़फी संप्रदाय का भक्ति गीत माना गया है। इसका काव्य व गायन ईश्वर को समर्पित किया गया है। भक्ति से ओत-प्रोत इस शैली को भारत वेफ विभिन्न ध्र्मों वेफ लोग जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख सभी ने अपनाया। काप़फी गायन शैली को सुनने वाले व पसंद करने वाले हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में ही नहीं अपितु विश्व भर में हैं व यह शैली श्रोताओं वेफ मन को आनन्द व शांति प्रदान करती है।काप़फी को रहस्यवाद काव्य माना गया है व यह सूप़फी काव्य का अटूट हिस्सा है। काप़फी को 'सूपि़फयाना कलाम' एवं 'आरप़फाना कलाम' भी कहा जाता है। काप़फी की परिभाषा व उत्पत्ति वेफ बारे में विद्वानों वेफ विभिन्न मत हैं। इस शोध कार्य में काप़फी वेफ शास्त्रा व क्रियात्मक दोनों ही पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। काप़फी गायक कलाकार मुल्तानी काप़फी व सिंधी काप़फी को कई अंदाज़ से गाते हैं जिसमें कई अन्य शैलियों का प्रभाव देखने को मिलता है जैसे ठुमरी, कव्वाली, लोकगीत। कलाकारों से किए गए साक्षात्कार वेफ द्वारा शोध्कर्ता ने काप़फी वेफ विभिन्न अंदाज़ से गायन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथा हिन्दुस्तानी व पाकिस्तानी कलाकारों द्वारा प्राप्त काप़फी की रचनाओं को एकत्रित किया है वउनकी स्वरलिपियाँ प्रदान की हैं। इन स्वरलिपियों में काप़फी विध वेफ विभिन्न प्रकार से गायन का रूप देखने को मिलता है। काप़फी की परिभाषा वेफ संबंध में विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाऐं दी हैं व सभी की अपनी धरणाएं हैं। वुफछ विद्वान इसे काव्य का भेद मानते हैं व वुफछ राग व वुफछ छंद का प्रकार। इन सभी विचारों का अध्ययन करवेफ शोधर्थी ने इन्हें एकत्रित करवेफ प्रस्तुत किया है व काप़फी वेफ अर्थ को व परिभाषा को निश्चित रूप देने का प्रयास किया है।

विषय सूची

1. पंजाबी की संस्कृति, लोक – संगीत एवं पंजाब मे काफ़ी गायन शैली 2. काफ़ी गायन शैली का साहित्यिक विश्लेषण 3. काफ़ी गायन शैली का सांगीतिक विश्लेषण 4. विभिन्न काफ़ी रचनाओं की स्वरलिपियाँ 5. काफ़ी गायक कलाकार व योगदान (19-20वीं सदी से वर्तमान समय तक). उपसंहार .पारिशिष्ट. संदर्भ ग्रंथ सूची ।

11. MANDA (Venkata Nagalakshmi)

Critacla Study of the Telugu Compositions Composed by Prominent Composers of 20th Century.

Supervisor: Prof. P.B Kanna Kumar

Th 27257

Abstract

Music and musical compositions play a great role in bringing the most desirable change in the minds of the people through the phenomenon of the aesthetic experience of subliminal bliss. The style of imparting education in oral tradition is widely followed to transfer music knowledge throughout the world. It took significant time to shift from the oral tradition of knowledge transfer to the written form. This happened in the later part of the 19th century. Many of the contributions made during the 19th and 20th centuries remained within those regions around Gurukulas, because of significant changes in political and socio-economic structures. In the expansive repository, Telugu occupies a significant place because

of the deep impact of the Trinity of Karnatic music who adopted the language of Telugu for penning their compositions. The lack of channels for the flow of such knowledge resources across the regions resulted in the resources remaining local and left unknown to other regions. The scholarly works of many Gurus, Vaggeyakaras in different languages were left unknown to the masses. The Vaggeyakaras from Telugu-speaking regions, Tirupati Vidyala Narayana Swamy, Sri Adibhatla Narayana Dasu, Duddu Seetarama Sastry, N.Ch.Krishnamacharyulu etc., have done extensive work on compositions. Several non-Telugu vaggeyakaras from non-Telugu regions like Patnam Subrahmanya Iyer, Poochi Srinivasa Iyengar, Veena Kuppaiyyar, Tanjore Ponnaiah Pillai, Anai-Ayya, Mysore Vasudevacharya, Vinjamuroori Varadaraja Iyengar, Kalyani varadarajan etc., had their entire thinking in their own mother tongue and picked up Telugu language for the love of Telugu and their works found disseminated across different regions within the Southern part of India. Accordingly, there is a significant gap in terms of scholarly works carried out in Telugu, by both Telugu and non-Telugu scholars. In this context, this research studies the contributions of the composers in depth focus on musical and lyrical aspects of compositions.

Contents

1. Introduction 2. Telugu as a medium of musical language 3. Telugu compositions of pre- trinity and trinity composers 4. Contributions of 19th and 20th century prominent non-telugu composers 5. Contributions of 19th and 20th century prominent telugu composers 6. Contributions of prominent contemporaty composers Conclusion. Appendices. Bibliography.

12. मिश्र (गरुण)
हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत मे प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से काफी थाटके रागों मे राग व्यहार(एक विश्लेषणात्मक आध्ययन) ।
निर्देशक: प्रो. शैलेंद्र कुमार गोस्वामी
Th 27128

सारांश

प्रस्तुत शोध्कार्य में अध्ययन वेफ उपरांत यह देखने को मिलता है कि वर्तमान समय में एक ही राग वेफ वफई स्वरूप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में विद्यमान हैं। एक ही मूल राग वेफ अनेक रूप हमें प्राप्त होते हैं जिसे विभिन्न अंगों, थाटों व भिन्न स्वर प्रयागों से गाया–बजाया जाता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुतिकरण पर यदि विचार करें तो प्रस्तुतिकरण की पृष्ठभूमि प्राचीनकाल से ही देखने को मिलती है। कालक्रमानुसार प्रस्तुतिकरण वेफ स्वरूप में अनेक परिवर्तनों वेफ विषय में भी ग्रंथों एवं पुस्तकों में उल्लेख मिलता है। इन परिवर्तनों वेफ परिणाम स्वरूप आधुनिक समय में पं. भातखंडे जी द्वारा थाट प(ति का विकास हुआ। इस प(ति को पं. भातखंडे ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आधर माना है। उन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत वेफ सभी रागों को दस थाटों में विभाजित किया है। इन दस थाटों में से एक कापफी थाट है जो कि सबसे बड़ा थाट माना जाता है। पं. भातखंडे जी ने कापफी थाट वेफ अंतर्गत पाँच रागांगों–कापफी, ध्नाश्री, कान्हड़ा, सारंग तथा मल्हार को सम्मिलित किया है। कापफी अंग वेफ अंतर्गत राग कापफी, सिन्दूरा एवं बरवा ये तीन राग प्राप्त होते हैं, जिनवेफ एक से अध्कि रूप हमें देखने को मिलते हैं। राग कापफी वेफ अनेक स्वरूप विद्यमान है। पहला प्रकार शु(कापफी एवं दूसरा मिश्र कापफी की श्रेणी मेंआता है। राग सिन्दूरा की प्रस्तुति दो प्रकार से की जाती है। पहला वेफवल कोमल निषाद लगाकर एवं दूसरे प्रकार में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है। पंरविशंकर, पं. वेफ.जी. गिंडे, पं. रामाश्रय ने इस राग में वेफवल कोमल निषाद का प्रयोग किया है जबकि पं. निखिल बनर्जी, पं. विकास कशालकर इत्यादि ने इस राग वेफ

आरोह में शु(निषाद का भी प्रयोग किया है। राग बरवा वेफ भी दो प्रकार पुस्तकों से प्राप्त होते हैं। प्रथम प्रकार में कोमल गंधर एवं दोनों निषाद का प्रयोग तथा द्वितीय प्रकार में हमें दोनों धैवत का भी प्रयोग मिलता है।

विषय सूची

1. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत मे राग प्रस्तुतीकरण एवं काफी थाट का संक्षिप्त परिचय 2. काफी एवं धनाश्री अंग के रागों का प्रस्तुतीकरण (राग स्वरूप प्रकार एवं व्यहार)3. कान्हड़ा एवं सारंग अंग के रागों का प्रस्तुतीकरण (राग स्वरूप प्रकार एवं व्यहार) 4. मल्हारअंग के रागों का प्रस्तुतीकरण (राग स्वरूप, प्रकार एवं व्यहार). उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची।

13. लीना
उस्ताद मम्मन खाँ- व्यक्तित्वएवं कृतित्व।
निर्देशक: डॉ. सरिता पाठक यजुर्वेद
Th 27129

सारांश

ध्रुपद वेफ पश्चात् जब ख्याल आया तो इसमें भी वर्ग बन गए, घराने बन गए। घरानों का आश्रय लेकर ही हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत समुचित रूप से विकसित हुआ। वर्तमान में ख्याल गायकी वेफ विविध घराने प्रकाश में आए है तथा इन्हीं सब घरानों ने भारतीय संगीत की परम्परा को समृ(शाली किया है।उस्ताद चांद खाँ साहब वेफ मतानुसार– मुगल बादशाहों वेफ पतन वेफ पश्चात् मुगलकाल वेफ अन्तिम बादशाह बहादुर शाह ज़पफर वेफ समय में कव्वाल बच्चों वेफ घराने वेफ अत्यंत प्रतिभाशाली मियाँ अचपल खाँ ने इस घराने की स्थापना की। इस परम्परा को इनवेफ प्रतिभाशाली शिष्य वुफतुब बख्श तानरस खाँ ने इस कला को आगे बढ़ाकर घराने को प्रतिष्ठित किया। दिल्ली घराने की गायन संबंधी विशेषता, जिसे अन्य घरानों से भिन्नता प्राप्त है, इसका मूल कारण यह है कि 'सारंगी' व 'सुर–सागर' जैसे तंत्रा–वाद्यों का पूर्व में प्रयोग होने वेफ कारण इस घराने की विलम्बित लय की चीज़ों में ;गायकी व वादकीद्ध में सूत, मींड, गमक व लहक का काम विशेष रूप से दिखाई देता है। इस घराने की तानें कठिन, जटिल व पेंच वाली होती हैं। इस घराने में ख्याल गायकी वेफ अंतर्गत वुफछ खास प्रकार वेफ ख्याल गाने की प्रथा है।सारंगी वाद्य को उच्च स्थान प्रदान करने तथा एक जटिल वाद्य सुर–सागर का अविष्कार करने वाले महान तथा प्रतिष्ठावान कलाकार उस्ताद 'मम्मन खाँ साहब' ने संगीत की इस प्राचीन ध्योहर को अपने शिष्य परशिष्यों को प्रदान किया। संगीत जगत को सुर–सागर जैसे दक्ष वाद्य प्रदान करवेफ उस्ताद मम्मन खाँ साहब ने एक अमूल्य योगदान दिया जो सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मम्मन खाँ साहब को गायन तथा वादन दोनों में ही समान रूप से अध्किार प्राप्त था अतः उनवेफ द्वारा शिक्षित किये गए कलाकारों ने दिल्ली घराने की सपफलता तथा उच्च दस्थान प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विषय सूची

1. घराना परंपरा, दिल्ली घराने की एतिहासिक पृष्ठिभूमि तथा विशेषताएँ 2. युग पुरुष उस्ताद म्ममन खाँ 3. उस्ताद म्ममन खाँ साहब का सांगीतिक योगदान 4. म्ममन खाँ एक शिक्षक के रूप मे (शिष्य एवं परशिष्य परंपरा). उपसंहार. परिशिष्ट. संदर्भ ग्रंथ ।

14. वर्मा (श्रुति राज)
स्वतंत्रता के पश्चात् बनारस घराने के प्रमुख तबला वादकों का संगत कला में योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक: डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन
Th 26811

सारांश

संगतकार का कार्य मुख्य कलाकार की रचनात्मक प्रकिया का उसी समय मनन एवं चिंतन करके संगत प्रदान करना होता है। संगतकार अपने स्वतंत्रता वादन के स्थान पर मुख्य कलाकार की रचना और उसकी विधा पर ध्यान देता है इस प्रकार संगतकार का कार्य मुख्य कलाकार के मानसिक वृत्तियों और उसकी शैली से परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हुए उसकी प्रस्तुति को प्रेरणा प्रदान करते हुए सफल प्रस्तुति में सहयोग देना होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों मे विभक्त किया है जो इस प्रकार हैं - प्रथम अध्याय "घराना" है जिसके अंतर्गत स्वतंत्रता से पूर्व घराने की पृष्ठभूमि है। इस उपअध्याय के अंतर्गत स्वतंत्रता से पूर्व घराने की क्या पृष्ठभूमि रही है, घरानों का प्रादुर्भाव कैसे हुआ, इन सभी बिंदुओं पर विस्तार पूर्वक बताया गया है द्वितीय अध्याय "बनारस घराना" है जिसके अंतर्गत बनारस घराने की स्थापना एवं संस्थापक उपअध्याय में पंडित राम सहाय जी के जन्म से लेकर शिक्षा, तबला वादन शैली एवं बनारस घराने के संस्थापक तथा उनकी शिष्य परंपरा के विषय में विस्तृत वर्णन किया है । तृतीय अध्याय "बनारस घराने की परम्पराओं में निहित प्रमुख तबला वादक तबला वादन" है जिसके अंतर्गत बनारस घराने में बनारस घराने के सभी परंपराओं का विस्तार से वर्णन किया है । चतुर्थ अध्याय "संगत परम्परा का सिद्धान्त" है जिसके अंतर्गत बनारस घराने के तबला वादकों की विभिन्न कलाकारों के साथ तबला संगत की रिकॉर्डिंग्स को सुनकर तबला संगत के सिद्धांतों को स्थापित किया है । पंचम अध्याय "बनारस के प्रमुख तबला वादकों का संगत कला में योगदान" है। बनारस घराना तबले का एक समृद्धशाली विभिन्न विशिष्टताओंयुक्त सुविख्यात घराना है। इस अध्याय में विभिन्न माध्यमों से प्राप्त रिकॉर्डिंग्स द्वारा बनारस घराने के प्रमुख तबला वादकों का देश के ख्यातिलब्ध गायक कलाकार, तंत्र वादक कलाकार एवं नृत्यकार के साथ उनकी संगत शैली की विशिष्टताओं को उजागर कर विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. घराना 2. बनारस घराना 3. बनारस घराने की परम्पराओं मे निहित प्रमुख तबला वादक 4. संगत परंपरा का सिद्धांत 5. बनारस घराने मे प्रमुख तबला वादकों का संगत कला मे योगदान . उपसंहार.. संदर्भ ग्रंथ सूची. परिशिष्ट ।

15. सहजवानी (सृष्टि)
हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत मे राजस्थानी भाषा मे निर्मित रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्यन
: ख़्याल गायन के विशेष संदर्भ में ।
निर्देशक: प्रो. शैलेंद्र कुमार गोस्वामी
Th 26812

सारांश

प्राचीन काल से भारतीय संगीत में राजस्थान का अतुलनीय योगदान रहा है। राजस्थान अपने आप में एक उत्कृष्ट सभ्यता और कला एवं संस्कृति का वाहक रहा है जो की आजभी अपनी निरंतरता बनाए हुए है। यह प्रचलित धारणा रही है कि केवल मात्र लोक संगीत ही राजस्थानी संगीत का प्रतिनिधित्व करता आया है परंतु यह अवधारणा सही नहीं क्योंकि राजस्थानी भाषा में रचित शास्त्रीय संगीत की बंदिशें भी उतनी ही उत्कृष्ट कोटि की है जितना की यहाँ का लोक संगीत। राजस्थानी भाषा में रचित उत्कृष्ट रचनाएँ आज भारतीय संगीत की अमूल्य धरोहर है जिसको संकलित कर प्रकाशित के उद्देश्य से इस विषय का चयन किया गया है: "हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राजस्थानी भाषा में निर्मित रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन: ख़्याल गायन के विशेष संदर्भ में" इस विषय के अन्तर्गत राजस्थान का भौगोलिक परिचय एवं सांस्कृतिक अवलोकन करते हुए राजस्थान क्षेत्र में

शास्त्रीय संगीत की परंपरा पर प्रकाश डाला गया है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट आश्र्यदाताओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके आश्रय में विकसित संगीत के घराने, संगीत के ग्रंथ तथा विभिन्न वग्गयकारो का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात राजथनी भाषा में रचित बंदिशों का साहित्यिक विश्लेषण किया गया है जिसमे विभिन्न राजस्थानी बंदिशों को निम्न विषयों में वर्गीकृत किया गया है: नायक- नायिका संबंधित, भक्तिपरक, उत्सव संबंधित, ऋतु संबंधित इत्यादि।। इसके पश्चात विभिन्न राजस्थानी भाषा की बंदिशों की स्वरलिपि जो विभिन्न प्रचलित व अप्रचलित रागों व तालों में निबद्ध है उनका सांगीतिक व तलात्मक विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. रास्थान का भौगोलिक परिचय एवं सांस्कृतिक अवलोकन 2. राजस्थानी भाषा में निबद्ध रचनाओं का साहित्यिक विश्लेषण 3. राजस्थानी बन्दिशों का सांगीतिक विश्लेषण 4. राजस्थानी भाषा में निर्मित बन्दिशों का तलात्मक विश्लेषण उपसंहार. संदर्भ ग्रंथ सूची. साक्षात्कार सूची .परिशिष्ठ।